कथा सरिता

व्यर्थ है अभिमान

एक घर के मुखिया को यह अभिमान हो गया कि उसके बिना उसके परिवार का काम नहीं चल सकता। उसकी छोटी सी दुकान थी। उससे जो आय होती थी, उसी से उसके परिवार का गुज़ारा चलता था।

चूंकि कमाने वाला वह अकेला ही था इसलिए उसे लगता था कि उसके बगैर कुछ नहीं हो सकता। वह लोगों के सामने डींग हांका करता था।

एक दिन वह एक संत के सत्संग में पहुंचा। संत कह रहे थे, ``दुनिया में किसी के बिना किसी का काम नहीं रुकता। यह अभिमान व्यर्थ है कि मेरे बिना परिवार या समाज ठहर जाएगा। सभी को अपने भाग्य के अनुसार ही प्राप्त होता है।''

सत्संग समाप्त होने के बाद मुखिया ने संत से कहा, ``मैं दिन भर कमाकर जो पैसे लाता हूँ उसी से मेरे घर का खर्च चलता है। मेरे बिना तो मेरे परिवार के लोग भूखे मर जाएंगे।''

संत बोले, ``यह तुम्हारा भ्रम है। हर कोई अपने भाग्य का खाता है।''

इस पर मुखिया ने कहा, ``आप इसे प्रमाणित करके दिखाइए।''

संत ने कहा, ``ठीक है। तुम बिना किसी को बताए घर से एक महीने के लिए गायब हो जाओ।''

उसने ऐसा ही किया। संत ने यह बात फैला दी कि उसे बाघ ने अपना भोजन बना लिया है। मुखिया के परिवार वाले कई दिनों तक शोक संतप्त रहे।

गांव वाले आखिरकार उनकी मदद के लिए सामने आए। एक सेठ ने उसके बड़े लड़के को अपने यहां नौकरी दे दी। गांव वालों ने मिलकर लड़की की शादी कर दी। एक व्यक्ति छोटे बेटे की पढ़ाई का खर्च देने को तैयार हो गया।

एक महीने बाद मुखिया छिपता-छिपाता रात के वक्त अपने घर आया। घर वालों ने भूत समझ कर दरवाज़ा नहीं खोला।

जब वह बहुत गिड़गिड़ाया और उसने सारी बातें बताईं तो उसकी पत्नी ने दरवाज़े के भीतर से ही उत्तर दिया, `हमें तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। अब हम पहले से ज़्यादा सुखी हैं।'

उस व्यक्ति का सारा अभिमान चूर-चूर हो गया। संसार किसी के लिए भी नहीं रुकता!!

यहां सभी के बिना काम चल सकता है। संसार सदा से चला आ रहा है और चलता रहेगा। जगत को चलाने की हाम भरने वाले बड़े-बड़े सम्राट मिट्टी हो गए, जगत उनके बिना भी चला है। इसलिए अपने बल का, अपने धन का, अपने कार्यों का, अपने ज्ञान का गर्व व्यर्थ है।

ऐसा भी प्रेम

एक फकीर बहुत दिनों तक बादशाह के साथ रहा। बादशाह का बहुत प्रेम उस फकीर पर हो गया। प्रेम भी इतना कि बादशाह रात को भी उसे अपने कमरे में सुलाता। कोई भी काम होता, दोनों साथ-साथ ही करते।

एक दिन दोनों शिकार खेलने गए और रास्ता भटक गए। भूखे-प्यासे एक पेड़ के नीचे पहुंचे। पेड़ पर एक ही फल लगा था। बादशाह ने घोड़े पर चढ़कर फल को अपने हाथ से तोड़ा।

बादशाह ने फल के छः टुकड़े किए और अपनी आदत के मुताबिक पहला टुकड़ा फकीर को दिया। फकीर ने टुकड़ा खाया और बोला, `बहुत स्वादिष्ट, ऐसा फल कभी नहीं खाया। एक टुकड़ा और दे दें।'

दूसरा टुकड़ा भी फकीर को मिल गया। फकीर ने एक टुकड़ा और बादशाह से मांग लिया। इसी तरह फकीर ने पाँच टुकड़े मांग कर खा लिए। जब फकीर ने आखिरी टुकड़ा मांगा, तो बादशाह ने कहा, `यह सीमा से बाहर है। आखिर मैं भी तो भूखा हूँ। मेरा तुम पर प्रेम है, पर तुम मुझसे प्रेम नहीं करते।' और सम्राट ने फल का टुकड़ा मुंह में रख लिया। मुंह में रखते ही राजा ने उसे थूक दिया, क्योंकि वह कड़वा था।

राजा बोला, `तुम पागल हो नहीं, इतना कड़वा फल कैसे खा गए?'

उस फकीर का उत्तर था, `जिन हाथों से बहुत मीठे फल खाने को मिले, एक कड़वे फल की शिकायत कैसे करूँ?' सब टुकड़े इसलिए लेता गया ताकि आपको पता न चले।

दोस्तों जहां मित्रता हो वहां संदेह न हो।

सज़ा किसको मिले?

एक राजा ब्राह्मणों को लंगर में भोजन करा रहा था। तब पंक्ति में अंत में बैठे एक ब्राह्मण को भोजन परोसते समय एक चील अपने पंजे में एक मुर्दा साँप लेकर राजा के ऊपर से गुज़री। और उस मुर्दा साँप के मुख से कुछ बूंदें ज़हर की खाने में गिर गई। फलस्वरूप वह ब्राह्मण ज़हरीला खाना खाते ही मर गया।

अब जब राजा को सच का पता चला तो ब्रह्म हत्या होने से उसे बहुत दुःख हुआ। मित्रों ऐसे में अब ऊपर बैठे यमराज के लिए भी यह फैसला लेना मुश्किल हो गया कि इस पाप-कर्म का फल किसके खाते में जायेगा... ?

राजा...जिसको पता ही नहीं था कि खाना ज़हरीला हो गया है...या...वह चील...जो ज़हरीला साँप लिए राजा के ऊपर से गुज़री...या...वह मुर्दा साँप... जो पहले से मर चुका था...

दोस्तों बहुत दिनों तक यह मामला यमराज की फाईल में अटका रहा। फिर कुछ समय बाद कुछ ब्राह्मण राजा से मिलने उस राज्य में आए, और उन्होंने किसी महिला से महल का रास्ता पूछा... तो उस महिला ने महल का रास्ता तो बता दिया, पर रास्ता बताने के साथ-साथ ब्राह्मणों से ये भी कह दिया कि देखो भाई... `ज़रा ध्यान रखना, वह राजा आप जैसे ब्राह्मणों को खाने में ज़हर देकर मार देता है।'

बस मित्रों जैसे ही उस महिला ने शब्द कहे, उसी समय यमराज ने फैसला ले लिया कि उस ब्राह्मण की मृत्यु के पाप का फल इस महिला के खाते में जाएगा और इसे उस पाप का फल भुगतना होगा।

यमराज के दूतों ने पूछा....प्रभु ऐसा क्यों? जबकि उस ब्राह्मण की हत्या में उस महिला की कोई भूमिका ही नहीं थी। तब यमराज ने कहा कि...भाई देखो, जब कोई व्यक्ति पाप करता है तब उसे आनंद मिलता है।

पर उस ब्राह्मण की हत्या से न तो राजा को आनंद मिला न मरे साँप को आनंद मिला और न ही उस चील को आनंद मिला... पर उस पाप-कर्म की घटना की बुराई करने के भाव से बखान कर उस महिला को ज़रूर आनंद मिला!

इसलिए राजा के उस अनजान पाप-कर्म का फल अब इस महिला के खाते में जायेगा।

बस मित्रों इसी घटना के तहत आज तक जब भी कोई व्यक्ति किसी दूसरे के पाप-कर्म का बखान बुरे भाव से करता है तब उस व्यक्ति के पापों का हिस्सा उस बुराई करने वाले के खाते में भी डाल दिया जाता है।

दोस्तों, अक्सर हम जीवन में सोचते हैं कि जीवन में ऐसा कोई पाप नहीं किया फिर भी जीवन में इतना कष्ट क्यों आया?

दोस्तों, ये कष्ट और कहीं ने नहीं बल्कि लोगों की बुराई करने के कारण उनके पाप-कर्मों से आया होता है जिनको यमराज बुराई करते ही हमारे खाते में ट्रांसफर कर देते हैं।

इसलिए दोस्तों, आज से ही संकल्प कर लो कि किसी के भी पाप-कर्मों का बखान बुरे भाव ने नहीं करना, यानी किसी की भी बुराई नहीं करना।

बिलाड़ा-राज.। अर्जुन लाल गर्ग साहब,विधि व न्याय मंत्री को राखी बांधते हुए ब्र.कु. आरती। साथ हैं ब्र.कु. लता।

फाज़िलका-पंजाब। मालेरकोटला की रानी मनवेर अलनिशा बेगम को परमात्म परिचय देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. प्रिया, ब्र.कु. शालिनी, फॉरेस्ट ऑफिसर सुभाष व सुमित्रा बहन।

शिकोहाबाद-अवगढ़। एडिशनल जज उमाशंकर शर्मा को राखी बांधते हुए ब्र.कु. पूनम। साथ हैं ब्र.कु. दीप्ति।

आगरा-शास्त्रीनगर। 'किसान सशक्तिकरण रैली के सेवाकेन्द्र पहुंचने पर रैली का निर्देशन व शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. सरिता व ब्र.कु. शालू।

बहादुरगढ़-हरियाणा। एच.एस. गैस प्लांट में 'रोड सेफ्टी' विषय पर आयोजित वर्कशॉप में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अमृता। साथ हैं ब्र.कु. दीपा।

दिल्ली-पीतमपुरा। बैंक ऑफ बड़ौदा के मैनेजर शंकर महतो को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कनिका, ब्र.कु. सुनीता व अन्य।